UPSC – CSE

सिविल सेवा परीक्षा

संघ लोक सेवा आयोग

सामान्य अध्ययन

पेपर 4 – भाग – 1

नीतिशास्त्र एवं सत्यनिष्ठा तथा निबंध लेखन

SIERRA INNOVATIONS

पेपर - 4 भाग - 1

नीतिशास्त्र एवं सत्यनिष्ठा

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**नीतिशास्त्र का परिचय - नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध** • नीतिशास्त्र की प्रमुख विशेषताये • मूल अवधारणा ○ नैतिकता और मूल्य • सार्वजनिक जीवन में नीतिशास्त्र • स्वतंत्रता और अनुशासन ○ स्वतंत्रता के विभिन्न दृष्टिकोण • नीति -शास्त्र के निर्धारक तत्त्व • कर्तव्य और अधिकार ○ कर्तव्य की अवधारणा ○ अधिकार की अवधारणा • नीतिशास्त्र का सार तत्त्व • नीतिशास्त्र और नैतिकता में अंतर • नैतिकता के आयाम ○ भारतीय परिपेक्ष्य में ○ पाश्चात्य परिपेक्ष्य में • प्रकार ○ मानकीय नीतिशास्त्र ○ विवरणात्मक नीतिशास्त्र Descriptive ethics ○ व्यावहारिक/अनुप्रयोगात्मक नीतिशास्त्र ○ अधि नीतिशास्त्र(Meta ethices) - ○ नैतिक यथार्थवाद (Moral Realism) ○ नैतिक प्रकृतिवाद ○ नैतिक अप्रकृतिवाद ○ अधि नीति शास्त्र और मानकीय नीति शास्त्र ○ व्याख्यात्मक नीतिशास्त्र ○ पर्यावरणीय नीतिशास्त्र	**1**
2.	**नैतिक गुण - मानवीय मूल्य** • मूल्य व नैतिकता ○ मानवीय मूल्य ○ मूल्यों की प्रकृति ○ मूल्य की विशेषताएं ○ मूल्यों के प्रकार ○ मूल्यों का वर्गीकरण • मूल्य का आशय एवं प्रासंगिकता • मूल्यों को विकसित करने में परिवार की भूमिका	**11**

	• मूल्यों को विकसित करने में शेक्षणिक संस्थानों की भूमिका
	• मूल्यों को विकसित करने में समाज की भूमिका
	• महान व्यक्तियों के जीवन के मूल्य
	  ○ महान नेताओ के जीवन से शिक्षा
	  ○ महान प्रशासको के जीवन से शिक्षा
	  ○ महान सुधारको के जीवन से शिक्षा
	• भारतीय परंपरा में मूल्यों का योगदान	

3.	**भारत और विश्व के नैतिक विचारकों और दार्शनिकों का योगदान**
	• भारतीय दर्शन (इंडियन स्कूल ऑफ फिलॉसफी)
	  ○ हिन्दू धर्म के प्रमुख लक्षण
	  ○ हिंदू धर्म की विशेषताएं इस प्रकार हैं
	  ○ जैन धर्म के सिद्धांत
	  ○ सात तत्त्व
	• जैन धर्म में मानवीय मूल्य
	• भारतीय विचारक
	  ○ कौटिल्य/चाणक्य
	  ○ तिरुवल्लुवर
	  ○ गुरुनानाक
	  ○ स्वामी विवेकानंद
	  ○ श्री अरबिंदो
	  ○ महात्मा गांधी
	  ○ राजा राममोहन राय
	  ○ भीमराव अम्बेडकर
	  ○ महादेव गोविन्द रानाडे
	• पश्चिम के दर्शिनको के प्रमुख विचार
	  ○ सदगुण (Virtue)
	  ○ सुकरात के दर्शन का सार
	  ○ प्लेटो के दर्शन का सार
	  ○ अरस्तु के दर्शन का सार
	  ○ जॉन स्टुअर्ट मिल
	  ○ सिजविक
		18

4.	**नीतिशास्त्र और उसके बहुआयामी स्वरूप**
	• कारोबारी नैतिकता
	• व्यावसायिक नैतिकता
	• चिकित्सीय नैतिकता
	• कॉर्पोरेट नैतिकता से संबंधित मुख्य क्षेत्र
	  ○ व्यापार नीतिशास्त्र
	  ○ बौद्धिक संपदा, कौशल नीतिशास्त्र
	  ○ उत्पाद नीतिशास्त्र
	  ○ लेखांकन नैतिकता
	  ○ मार्केटिंग नीतिशास्त्र
	  ○ उत्पादन में नैतिकता
	• हित संघर्ष व नीतिशास्त्र का संबंध
	• कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व (Corporate Social Responsibility)
	• हिंसा या अहिंसा के बीच का नैतिक द्वंद
		34

	• विवाह-निजी विषय या समाज द्वारा निर्देशित • मृत्यु दण्ड-समाज के लिए संदेश या जीवन के अधिकार का उल्लंघन • नैतिकता के सारतत्त्व और व्यावहारिक जीवन ○ सामाजिक जीवन में नैतिकता के सारतत्त्व ○ राजनीतिक स्तर पर नैतिकता का सारतत्त्व ○ आर्थिक स्तर पर नैतिकता का सारतत्त्व ○ पर्यावरणीय स्तर पर नैतिकता का सारतत्त्व ○ शासन में नैतिकता का सारतत्त्व ○ प्रशासनिक नैतिकता के अभाव से उत्पन्न समस्याएं	
5.	**मनोवृत्ति/ अभिवृत्ति** • मनोवृत्ति और मानव व्यवहार ○ मनोवृत्ति के तत्व ○ मनोवृत्ति के कार्य ○ मनोवृत्ति के प्रकार्य The Functions of Attitude ○ मनोवृत्ति परिवर्तन (Attitudinal Change) ○ मनोवृत्ति परिवर्तन के सिद्धांत • प्रबोधक ○ प्रबोधनकर्ता (Persuader) ○ प्रमुख विशेषताये ○ प्रबोधक / अनुनय का प्रयोग ○ प्रशासनिक संदर्भ में प्रबोधक अनुनय की उपयोगिता • पूर्वाग्रह का अर्थ ○ पूर्वाग्रह की परिभाषाएँ ○ पूर्वाग्रह की विशेषताएँ • रूढ़ियुक्ति(stereotypes) ○ रूढ़ियुक्ति (stereotype) की परिभाषा ○ रूढ़ियुक्ति के कारण ○ रूढ़ियुक्ति की विशेषताएँ ○ रूढ़ियुक्ति का अर्थ ○ रूढ़ियुक्ति में बदलाव	**39**
6.	**अभिक्षमता (Aptitude)** • अभिक्षमता (Aptitude) की पांच प्रमुख विशेषताएं • अभिक्षमता के प्रकार ○ भावनात्मक क्षमता ○ सामाजिक अभिक्षमता (Aptitude) ○ सांगठनिक अभिक्षमता ○ प्रशासनिक अभिक्षमता ○ तकनीकी अभिक्षमता (Aptitude) ○ सिविल सेवा के लिए अभिक्षमता (Aptitude) • अभिक्षमता (Aptitude) और अभिरूचि में अंतर • बुनियादी मूल्य क्या है? ○ बुनियादी मूल्यों को स्थापित करने वाले कारक • सत्यनिष्ठा ○ सत्यनिष्ठा की परिभाषा शाब्दिक रूप ○ सत्यनिष्ठा का दार्शनिक आधार	**50**

	○ सत्यनिष्ठा का संवैधानिक आधार ○ सत्यनिष्ठा के आयाम (Dimensions of Integrity) ○ संगठनात्मक या सिविल सेवा के स्तर पर सत्यनिष्ठा (Integrity) लाने उपाय ○ लोक सेवा में सत्यनिष्ठा (Integrity) • सच्चरित्रता ○ सिविल सेवा में सच्चरित्रता ○ सत्यनिष्ठा के विकास के लिए निम्न विदुओ पर, ध्यान दिया जाना अत्यावश्यक है। • समानुभूति Empathy ○ प्रमुख विशेषताये ○ समानभूति का दार्शनिक और संवैधानिक आधार ○ समानभूति (Empathy) निर्णय निर्माण प्रक्रिया का एक प्रभावी माध्यम • सहानुभूति (Sympathy) ○ समानुभूति और करुणा ○ समानुभूति और दया (Pityness) ○ समानुभूति से लाभ ○ समानुभूतिक शुन्यता • दयालुता (Kindness) ○ नैतिक सिद्धान्त 65 • सहिष्णुता ○ सहिष्णुता के मार्ग में बाधाएँ • संवेदना • निष्पपक्षता ○ निष्पक्षता की प्रमुख विशेषता ○ निष्पक्षता के आयाम ○ लोकसेवा में निष्पक्षता (Fairness) • वस्तुनिष्ठता (objectivity) ○ लोक सेवा में वस्तुनिष्ठता • निष्पक्षता बनाम पक्षपात (discrimination & Preferential treatment) ○ निष्पक्षता बनाम तटस्थता ○ निष्पक्षता बनाम प्रतिबद्धता(commitment) • राजनीति क्या हैं? • अधिमानी बर्ताव(Preferential Treatment)	
7.	**भावनात्मक समझ (EI)** • Emotional Intelligence भावनात्मक प्रज्ञता ○ प्रमुख तत्व ○ संवेगिक बुद्धिमत्ता के चार विशिष्ट गुण ○ EI, सिविल सेवक को निम्नलिखित तरीकों से सहायता कर सकती है ○ मैक्स वेबर का मत • भावनात्मक प्रबंधन • योग्यता प्रतिदर्श ○ गोलमैन इस प्रतिदशो के पांच अवयव • अंतरात्मा के प्रकार • अवधारणा (Penception)	**68**

8.	**प्रशासन में नीतिशास्त्र** • आचार संहिता और आचरण संहिता में अंतर ○ आचार संहिता (Code orEthics) ○ लोक सेवकों के लिए आचार संहिता की आवश्यकता के कारण ○ आचरण संहिता (Code of Conduct) ○ आचरण संहिता की आवश्यकता • नीति संहिता ○ लोक सेवकों के लिए आचार/ नैतिक संहिता के प्रमुख प्रावधान ○ 2006 बिल में शामिल आचार नैतिक नियमों का उल्लेख ○ नोलान समिति की सिद्धांत (2nd ARC रिपोर्ट) • भागीदारी आधारित शासन (सरकार, निजी क्षेत्र ,नागरिक समाज)	**73**
9.	**शासन व्यवस्था में ईमानदारी** • नैतिकता और राजनीति ○ राजनीतिक सुधारों के मुद्दे ○ सार्वजनिक जीवन में नैतिकता ○ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 ○ केंद्रीय सतर्कता आयोग Central Vigilance Commission (CVC) ○ केंद्रीय जाँच ब्यूरो Central Bureau of investigation (CBI) ○ भारत में मंत्रियों के लिये नैतिक ढाँचा ○ वर्तमान आचार संहिता ○ लोकपाल ○ प्रधानमंत्री एवं लोकपाल ○ लोकायुक्त ○ स्थानीय स्तर पर ओम्बड्समैन • सिटिजन चार्टर ○ सरकारी कार्यालयों की रेटिंग ○ मिथ्या दावा अधिनियम • मीडिया की भूमिका • सामाजिक लेखा-जोखा • सिविल सेवाओं में सुधार करना ○ सिविल सेवकों के लिये नैतिक संहिता ○ ईमानदार सिविल सेवक की रक्षा करना ○ राजनीतिक कार्यपालक और स्थायी लोकसेवा में संबंध • सिविल समाज ○ सिविल समाज की भूमिका ○ सिविल समाज की चिंताए	**77**
10.	**नैतिक तर्क** • नैतिक तर्क ○ नैतिक तर्क का अर्थ ○ नैतिक तर्क की प्रक्रिया ○ नैतिक तर्क के कार्य या भूमिका ○ नैतिक तर्क और कानून	**90**
10.	**प्रमुख केस स्टडी** • केस स्टडी -1 • केस स्टडी -2	**92**

	• केस स्टडी -3 • केस स्टडी-4 • केस स्टडी -5 • केस स्टडी -6 • केस स्टडी-7 • केस स्टडी-8 • केस स्टडी -9 • केस स्टडी -10	

निबंध लेखन

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**एक अच्छा निबंध कैसे लिखें एक अवलोकन** • निबंध क्या है? • एक निबंध को क्या नहीं होना चाहिए.... • एक अच्छे निबंध के अवयव	**101**
2.	**UPSC मुख्य परीक्षा निबंध के विशिष्ट पहलू** • निबंध पेपर पैटर्न • UPSC - निबंध के पेपर में अच्छे अंक कैसे प्राप्त करें? • निबंध लेखन का दृष्टिकोण • विषय चुनने का आधार • निबंध से क्या अपेक्षा की जाती है? • निबंध के विषय का संदर्भ • मुख्य शब्द की परिभाषा • दो उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहिए • दार्शनिक निबंध कैसे लिखें	**103**
3.	**महिला सशक्तिकरण**	**109**
4.	**भारत में शिक्षा**	**114**
5.	**भारत में स्वास्थ्य सेवा** • परिचय • स्वास्थ्य संबंधी संवैधानिक प्रावधान • हेल्थकेयर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता • कोविड महामारी के दौरान स्वास्थ्य सेवा • स्वास्थ्य सेवा के संबंध में सरकारी योजनाएं • भारत में सर्वोत्तम अभ्यास • दुनिया में सर्वोत्तम अभ्यास • भारत में स्वास्थ्य की चुनौतियां • भारत में स्वास्थ्य देखभाल के लिए सुझाव • निष्कर्ष	**121**
6.	**भारत में शहरी योजना भारत के भावी शहरों का निर्माण**	**126**
7.	**वैश्वीकरण, इसके निहितार्थ और हाल के रुझान**	**129**
8.	**कृषि**	**132**
9.	**जलवायु परिवर्तन**	**137**

	• परिचय • जलवायु परिवर्तन के साक्ष्य • जलवायु परिवर्तन का प्रभाव • पृथ्वी पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को दर्शाने वाली घटनाएँ • जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार कारक • जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए भारत द्वारा की गई प्रमुख कार्रवाई • वैश्विक प्रतिक्रिया • निष्कर्ष	
10.	**कृत्रिम बुद्धिमता**	**142**
11.	**क्रिप्टोकरेंसी आर्थिक सशक्तिकरण का एक उपकरण या एक नियामक दुःस्वप्न**	**147**
12.	**सोशल मीडिया और उसकी बुराई**	**150**
13.	**भारत में पर्यटन**	**154**
14.	**रक्षा उद्योग का स्वदेशीकरण आयातक से निर्यातक तक** • निष्कर्ष • परिशिष्ट A ○ उद्धरणों का संग्रह ○ व्यक्तिगत रूप से उद्धरणों का संग्रह	**156**

1 CHAPTER

नीतिशास्त्र का परिचय - नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध

- नीतिशास्त्र एक नैतिक दर्शन है।
- यह मानवीय आचरण का वैज्ञानिक दर्शन प्रस्तुत करता है।
- यह दर्शनशास्त्र की उस शाखा का प्रतिनिधित्व करती है, जो व्यक्ति के द्वारा किये गये कार्यों के नैतिक या अनैतिक अथवा सही या गलत को बतलाती है।
- यह वास्तव में दर्शनशास्त्र के मूल्यमीमांसा (Axiology) शाखा से संबंधित है, जो नैतिक (Ethics) एवं सौंदर्यशास्त्र (Aesthetics) की विवेचना करता है।
- नीतिशास्त्र के संबंध में सबसे बड़ी समस्या है कि विद्वानों के मध्य मतैक्य भिन्नता की स्थिति है।
- कुछ विद्वान इसे विज्ञान की शाखा में निरूपित करते है जबकि कुछ विद्वानों ने इसे कला के रूप में संदर्भित किया है।

नीतिशास्त्र की प्रमुख विशेषताये

1. **नैतिकता (Ethics) -** रीति, प्रचलन या आदत है जबकि नीतिशास्त्र, नीति , प्रचलन या आदत का व्यवस्थित अध्ययन है
2. नीतिशास्त्र एक ऐसा आदर्शवादी विज्ञान है,जो मानव आचरण का मूल्यांकन करता है।
3. आचरण के अंतर्गत मनुष्य की केवल ऐच्छिक क्रियाएँ आती है। उन्ही क्रियाओं को ऐच्छिक कहा जाता है ,जिसके करने में व्यक्ति अपने संकल्प से काम लेता है।
4. नीतिशास्त्र वह आदर्श मूलक और मानकीय विज्ञान है ,जो सामाजिक जीवन व्यतीत करने वाले मनुष्य के ऐच्छिक और आचरण सम्बंधी कर्मों का विश्लेषण कर उनके संबंध में उचित , अनुचित अथवा शुभ - अशुभ का मानदण्ड प्रस्तुत करता है।
5. नैतिकता और नीतिशास्त्र के सभी मानदण्ड मनुष्य के केवल ऐच्छिक कर्मो पर ही लागू होते हैं। मनुष्य के अनऐच्छिक कर्मो का विश्लेषण नीतिशास्त्र का विषय नही है। जैसे - मनुष्य की आंतरिक और शारीरिक क्रियाये अनऐच्छिक क्रियाये होती है और नीतिशास्त्र इनके संबंध में कोई वाद अथवा मानदण्ड प्रस्तुत नही करता ।
6. इसके विपरीत विपत्ती में किसी व्यक्ति सहायता करना, किसी व्यक्ति का ऐच्छिक कर्म है, क्योकि यह व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह किसी व्यक्ति सहायता करे या न करे, इसलिए यह नीतिशास्त्र का विषय और नीतिशास्त्र इसके संबंध में मानदंड प्रस्तुत करता है।
7. मनुष्य द्वारा किया गया प्रत्येक फर्म था तो सही कहा जाता था गलत , परन्त प्रश्न यह है कि किसी कर्म को सही या गलत कहने के लिए हमारे पास क्या विषय ,मानक और तर्क है
8. नीतिशास्त्र हमें इन विषयों और मानकों से अवगत कराता है जिसके आधार पर हम किसी कर्म का विश्लेषण करके उसे सही या गलत कहते है।
9. इसके अतिरिक्त किसी कर्म का विश्लेषण करते समय नीतिशास्त्र केवल उपलब्ध तथ्यों को ही आधार नही बनाता बल्कि वह उन तथ्यों की प्रासगिकता पर भी विचार करता है, जिन्हे हम बोद्धिक स्तर पर स्वीकार या नकार सकते है और साथ ही इन तथ्यों के प्रभावों से उत्पन्न संभावित व्यावहारिफ परिणामों तक पहुंच सकते है।
10. नीतिशास्त्र का संबंध आचरण के औचित्य और अनोचित्य से है। इसे परखने के कुछ नियम और मानदंड होते है , जिसका निर्धारण नीतिशास्त्र के तहत ही होता है। अत', नीतिशास्त्र का लक्ष्य है जीवन के वास्तविक आदर्श, आचरण के नियम तया मानदण्डों फो स्थापित करना।

11. नीतिशास्त्र लोक प्रशासन का अनिवार्य अंग है। यह लोक प्रशासन के अंतर्गत इन मानदंडों को प्रस्तुत करता है जिसका अनुसरण कर लोक प्रशासन प्रभावी और कुशल प्रशासन के साथ-साथ उतरदायी रुप से जबाबदेयता सुनिश्चित करने वाला सुशासन उपलब्ध कराए।
12. नीतिशास्त्र या आचार संहिता समानार्थी है। उदाहणार्थ नैतिक आचरण का अर्थ नियमबद्ध आचरण से ही है। नीतिशास्त्र को नैतिकता का विज्ञान भी कहा जाता है और व्यक्ति भी इसी नैतिकता के सिद्धांतानुसार व्यवहार करता है।

मूल अवधारणा

नैतिकता और मूल्य

नैतिकता	मूल्य
• किसी व्यक्ति द्वारा धारण किए गए **सही और गलत के सिद्धांत।** • किसी व्यक्ति से संबंधित व्यवहार के मानक न कि **सामाजिक आचरण।** • व्यक्तिगत **अनुभव**, **चरित्र**, **विवेक** आदि से उत्पन्न होता है। • **उदाहरण**: समलैंगिकता एक व्यक्ति के लिए नैतिक हो सकती है लेकिन समाज के परिप्रेक्ष्य में अनैतिक है।	• **गुण** हमारे लिए **महत्वपूर्ण** हैं। • किसी **कार्रवाई** की **वांछनीयता** को **मापने** के लिए **मानक।** • एक **आंतरिक कंपास** के रूप में कार्य करता है जो एक व्यक्ति को **आचरण** और **व्यवहार** के विभिन्न विकल्पों का **मूल्यांकन** करने में **सहायता** करता है। • **उदाहरण**: ईमानदारी, अखंडता, सहानुभूति, साहस, समर्पण, करुणा आदि।

विश्वास

- यह एक व्यक्ति के व्यवहार घटकों की व्याख्या करता है।
- यह एक आंतरिक भावना है कि आपकी मान्यता सच है, भले ही वह विश्वास अप्रमाणित और तर्कहीन हो।
- उदा. गांधीजी का मानना था कि असहयोग आंदोलन शुरू करने के एक वर्ष के भीतर स्वराज प्राप्त किया जा सकता है।
- यह परिधीय (कमजोर) और मूल (मजबूत) हो सकता है।
- प्रत्यक्ष बातचीत से बनने वाले विश्वास आम तौर पर मजबूत होते हैं।
- इसे संज्ञान के रूप में भी जाना जाता है।

सार्वजनिक जीवन में नीतिशास्त्र

- लोकतंत्र में सभी सार्वजनिक पदाधिकारी जनता के ट्रस्टी होते हैं।
- जनता और अधिकारियों के बीच संबंध के लिए आवश्यक है कि अधिकारियों को सौंपे गए अधिकार का प्रयोग 'जनहित' में किया जाए।
- यूनाइटेड किंगडम में सार्वजनिक जीवन में मानकों पर समिति/नोलन समिति ने सार्वजनिक जीवन के निम्नलिखित सात सिद्धांतों (OHIOSAL) को रेखांकित किया।
  - वस्तुनिष्ठता
  - ईमानदारी
  - अखंडता
  - उदारता
  - निःस्वार्थता
  - जवाबदेही
  - नेतृत्व

स्वतंत्रता और अनुशासन

- स्वतंत्रता मूल मानवीय मूल्य है अर्थात:
    - प्राणी स्वतंत्र रहना चाहते है। वे बंधन और प्रतिबंधों को नापसंद करते हैं।
    - कहावत है - आदमी स्वतंत्र पैदा होता है लेकिन हर जगह वह जंजीरों में जकड़ा होता है।

स्वतंत्रता के विभिन्न दृष्टिकोण

व्यक्तिगत स्वतंत्रत	• आवश्यक है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है।
बौद्धिक स्वतंत्रता	• मन की स्वतंत्रता, ज्ञान, पुराने विचारों पर सवाल उठाने और नए बनाने की स्वतंत्रता, अकल्पनीय सोच की स्वतंत्रता, अगम्य तक पहुँचने की स्वतंत्रता।
इच्छा-स्वातंत्र्य	• विकल्पों के बीच चयन करने की स्वतंत्रता को दर्शाता है • यथास्थिति पर सवाल उठाने के लिए जरूरी

नीति -शास्त्र के निर्धारक तत्त्व

आंतरिक करक

1) **सामाजीकरण**
    - यह एसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी संस्कृति को सीखता है
    - परिवार के द्वारा किसी व्यक्ति प्राथमिक सामाजीकरण व शिक्षा , संस्थाओं व अन्य संचार के माध्यम से कोई व्यक्ति अपनी संस्कृति, परंपराओ व प्रथाओ को जानता व समझाता है।
    - वास्तविक अर्थों में रीति रिवाज को सांस्कृतिक कारक बहुत दूर तक प्रभावित करते है। कुछ स्थितियों में जरूरतमंद लोगों के लिए सहायता का प्रचलन देखने को मिलता है।
2) **मनोवैज्ञानिक**
    - यह व्यक्तित्व का गुण है। जैसे - जिन लोगों में कर्तव्यपरायणता अधिक होती है उनके नैतिक होने की सम्भावना अधिक होती है, कुछ व्यक्तियों में स्वाभाविक रुप से दूसरों की सेवा करने का गुण पाया जाता है।जैसे - मदर टेरेसा, बाबा आम्टे आदि ।
3) **धार्मिक**
    - विश्व के सभी में धर्मो में कुछ न कुछ नैतिक मूल्यों को बढावा देने पर बल दिया जाता है।
4) **ऐच्छिक कर्म**
    - अपनी इच्छानुसार कर्म करने या न करने की स्वतंत्रता को ही संकल्प की स्वतंत्रता कहते है । किसी व्यक्ति को अच्छा-बुरा भी तभी कहा जा सकता है जब उसके पास ऐसी स्वतंत्रता उपलब्ध हो ,जैसे
    - किसी सिविल सेवक को जीवन रक्षा में अनैतिक कार्य करने पड़े तो वास्तविक अर्थ में यह अनैतिक के समकक्ष नही है क्योकि ऐसा किसी व्यक्ति ने अपनी जीवन रक्षा के उद्देश्य से किया है।

बाहरी करक

विधायी ढांचा

- कई राष्ट्रों में सार्वजनिक जीवन में उचित व नैतिक मुल्यों का संविधान में उल्लेख है।
- जैसे USA में 50 राज्यों में से कुल 47 राज्यों में लिखित रुप से नैतिक आचार संहिता को अपनाया है।
- भारतीय परिस्थितियों में लोक सेवा विधेयक (2006) कानून बनने के रस्ते में है । इसमें सिविल सेवकों के लिए नैतिक मूल्यों को दर्शाया गया है।

संस्थागत ढांचा

- नैतिकता को निर्धारित करने में संस्थागत घटक जैसे आयोग, कार्यालय आदि की बड़ी भूमिका दिखाई देती है।
- द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग का चौथा प्रतिवेदन शासन व्यवस्था की नैतिकता से संबंधित है।
- अमेरिका के 36 राज्यों में बने एथिक्स कमीशनों   के प्रतिवेदनों के माध्यम से काफी हद तक नैतिकता का विकास हुआ है।

न्यायपालिका

- न्यायपालिका स्वयं नैतिक मानदण्डों को विकसित करती है। जैसे – आरुषी हत्याकाण्ड में न्यायपालिका ने माता-पिता को दंड देकर यह मानक स्थापित किया कि स्वयं माँ -बाप भी जान लेने वाले हो सकते।

लोक प्रचार / संचार

- इसके अनेक माध्यम है और वर्तमान समय में ई –गवर्नेंस आदि माध्यम से सभी प्रकार के नियमो आदि को प्रचारित किया जाता है

नोकरशाही का विकेन्द्रीकरण

- विकेंद्रीकरण एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा शासन ,प्रशासन के अंतिम पायदान तक सभी प्रकार नैतिक नियमो आदि को पहुचाया जा सकता है

कर्तव्य और अधिकार

कर्तव्य की अवधारणा

- नागरिकों के रूप में, कर्तव्यों की एक विस्तृत श्रृंखला मौजूद है जो हमें रोजमर्रा की जिंदगी में जोडती है।
- ये कर्तव्य राज्य और व्यक्तियों के लिए देय हैं।
- करों का भुगतान करना, साथी-नागरिकों के खिलाफ हिंसा करने से बचना और संसद द्वारा बनाए गए अन्य कानूनों का पालन करना एक कानूनी कर्तव्य है।
- इन कानूनी कर्तव्यों के उल्लंघन से वित्तीय परिणाम (जुर्माना), या कारावास जैसे दंडात्मक उपाय होते हैं।
- कर्तव्य एक सरल तर्क का पालन करते हैं कि शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए कुछ हद तक आत्म-बलिदान की आवश्यकता होती है, और इसे प्रतिबंधों द्वारा लागू किया जाना चाहिए।

अधिकार की अवधारणा

- भारत में, यह संविधान में मौलिक अधिकारों पर एक अध्याय में परिलक्षित हो सकता है।
- अमानवीयकरण के खिलाफ एक सुरक्षा कवच के रूप में अधिकार:
    - मौलिक अधिकारों पर विचार-विमर्श करते हुए भारतीय संविधान के निर्माताओं का विचार था कि प्रत्येक मनुष्य की बुनियादी गरिमा और समानता तक पहुंच होनी चाहिए जिसे राज्य द्वारा नहीं छीना जा सकता है।
    - भारत में मौलिक अधिकारों की आवश्यकता औपनिवेशिक शासन के उन अनुभवों से उत्पन्न हुई जहाँ भारतीयों के साथ प्रजा के जैसा व्यवहार किया जाता था।
        - उदाहरण के लिए, औपनिवेशिक सरकार ने लोगों के कुछ समूह को आपराधिक जनजाति के रूप में घोषित किया, जिनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था।

नीतिशास्त्र का सार तत्त्व

मानवीय क्रिया कलाप का सार तत्त्व दो शब्दों के इर्द-गिर्द देखा जा सकता है

- परहित
- सार्वभोमिकता
- ऐसा कोई भी ऐच्छिक कर्म जो कोई व्यक्ति समाज के सामने कही भी कर सफता है। ऐसे आचरणों या व्यवहारों को नैतिक माना जा सकता है। साथ ही ऐसा स्वेक्छिक कर्म जिसमें स्वयं के हित का पहलू अन्तर्निहित न हों और तर्क पूर्व औचित्यो के माध्यम से उसे सही ठहराया गया हो। ऐसे आचरण व्यवहार को ही नैतिक व्यवहार कहा जा सकता है।

- इस तरह नैतिकता इन्ही दो वस्तुओं के इर्द -गिर्द देखने को मिलती है
- नीतिशास्त्र में प्रत्येक चरण में तर्क फा भाव समाहित होते हैं। जैसे - कानून का सारतत्व आज्ञापालन होता है,धर्म का सारतत्त्व आस्था होता है,विज्ञान का सारतत्व तर्क होता है। ठीक उसी प्रफार नीतिशास्त्र का सारतत्व उचित कर्त्तव्य होता है। नीतिशास्त्र का सारतत्व जनमानस के हित से जुड़ा होता है।

नीतिशास्त्र के सारतत्व में कई सिद्धांतो को सम्मिलित किया जाता है।

- तर्कवाद
- व्यापकता-व्यापक स्तर के कार्यो का संपादन
- सार्व भोमिकता
- उपयोगिता
- व्यक्तित्व

नीतिशास्त्र और नैतिकता

- Moral's शब्द की उत्पत्ति लैटिन के रीति-रिवाज' से है। मरीयम वेबस्टर (Marriam Webster) डिक्सनरी में नैतिकता शब्द को सही व गलत व्यवहार के विश्वास के रूप में दर्शाया गया है। नीतिशास्त्र में दार्शनिक नियमों के समुच्चय को रखा गया है, वहीं नैतिकता विश्वास की वह नियमावली है जिसे समाज व धर्म द्वारा निर्देशित किया जाता है।

नीतिशास्त्र और नैतिकता में अंतर

नीतिशास्त्र	**नैतिकता**
• मानवीय कार्यों के एक विशेष समूह या वर्ग या संस्कृति के संबंध में आचरण/व्यवहार के लिए यह ग्रीक शब्द Ethos' से लिया गया है जिसका अर्थ-चरित्र। • नीति शास्त्र एक वाह्य-सामाजिक प्रणाली है यह सामाजिक व्यवस्था (Social System) से आया है व External (वाह्य) है। इसमें नैतिक आचरण के सिद्धांत होते है, बौद्धिक प्रयास होते है। • नियमों और निश्चित guideline के तहत परिभाषित होती है और विशेष देश और काल के संदर्भ में निर्देशित होता है। • यह विशेष मानवीय क्रियाओं या विशेष समूह के संदर्भ में समन्वित conducts है। क्योंकि समाज कहता है कि यह उचित है। • इसे करो (ज्यादा लचीला) (more flexible) होता है, यह अपनी व्याख्या के लिए दूसरों पर निर्भर रहता है और एक निश्चित दायरे में साम्यता रखता है किन्तु विभिन्न संदर्भो में यह परिवर्तित हो सकता है। • यह आवश्यक नहीं है कि हम एथिक्स का पालन करते समय नैतिकता को बनाए अर्थात् हम बिना नैतिकता के भी Ethical हो सकते हैं।	• आचरण से संबंधित सही या गलत का सिद्धांत होता है । यद्यपि नैतिक मूल्य भी करणीय (Duos) और अकरणीय (Donts) को निर्देशित करते हैं। अंततः यह मानवीय आचरण के सही और गलत के व्यक्तिगत या निजी निर्धारक है। यह लैटिन शब्द (More) से लिया गया है जिसका अर्थ रिवाज (Custom) है। • जबकि नैतिकता, आंतरिक एवं व्यक्तिगत होती है, यह आंतरिक (enternal) एवं व्यक्तिगत होती है, इसमें मनको का समूह होता है अवम यह व्यवहार को परिभाषित करती है। • यह सामान्य सांस्कृतिक मानकों को आधार बनाती है और इसकी ग्रहणशीलता व्यापक होती है। यह सिद्धांत या वह आदत व्यवहार जो सिखाती है कि क्या अच्छा है या क्या बुरा। • क्योंकि हम इसमें विश्वास करते हैं कि क्या उचित है और क्या अनुचित (कम लचीला) (Less flexible) होती है। • कभी-कभी नैतिकता का पक्ष रखने के लिए एथिक्स की अवहेलना भी की जा सकती है।

नैतिकता के आयाम

भारतीय परिपेक्ष्य में

- आश्रम धर्म
- वर्ण धर्म
- सामान्य धर्म

पाश्चात्य परिपेक्ष्य में

- मानकीय नीति शास्त्र
- निर्देशानात्मक नीतिशास्त्र
- विवरणात्मक
- मेटा एथिक्स
- प्रयोगात्मक नीति शास्त्र

प्रकार

मानकीय नीतिशास्त्र

- इसमे आचरण को आदर्श बताया जाता है।अर्थात मानव - आचरण कैसा होना चाहिए | इस तथ्य की विवेचना की जाती है।
- वास्तव में यह उस कसौटी की खोज है जो किसी व्यवहार के औचित्य का परीक्षण करता है।
- मानकीय नीतिशास्त्र कुछ मानकों पर आधारित नैतिक सिद्धांतों की भी स्चना करता है अर्थात कुछ ऐसे नैतिक सिद्धांतो का प्रतिपादन करता है जो कठिन परिस्थितियों में भी नतिक निर्णय लेने में सहायक होते है।
- कौन सा पदार्थ अच्छा है और कौन सा खराब? कौन सा कार्य सही है और कौन सा गलत? इसके तहत एक आचार संहिता तैयार कर दी जाती है और उन्हीं तय आचार या नियम के अनुसार- कार्य निर्धारण किया जाता है। इसका वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया गया है

1. **परिणामवाद**
    - किसी भी कार्य की नैतिकता या अनैतिकता का आधार उस क्रिया का परिणाम होगा। नैतिक दृष्टि से उचित कार्य वही होगा जिसका परिणाम बेहतर होगा।

परिणामवाद के प्रकार

उपयोगितावाद (Unitarianism):

- कोई भी ऐसा कार्य जो अधिकतम लोगों को अधिकतम सुख दे वह बेहतर है। सुख को बेहतर तब मानेंगे जब आनंद की अनुभूति अधिक हो और दुःख कम हो। मानव के लिए सुख ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। व्यक्ति को ऐसे कार्य करने चाहिए जो उसके सुख को चरम पर लेकर चला जाए।

सुखवाद (Hedonism):

- **सुखवाद** (Hedonism) नीतिशास्त्र के अंतर्गत नैतिक अपेक्षाओं की अभिपुष्टि करने वाला सिद्धांत है। **सुखवाद** के अनुसार अच्छाई वह है जो आनन्द प्रदान करती है या दुःख-पीड़ा से छुटकारा दिलाती है तथा बुराई वह है जो दुःख-पीड़ा को जन्म देती है। सैद्धांतिक तौर पर **सुखवाद** नीतिशास्त्र में प्रकृतिवाद का एक रूपांतर है।

स्वार्थवाद (Egoism):

- मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद का पूरा समर्थन-व्यक्ति का संपूर्ण जीवन उसकी स्वार्थमूलक ईच्छाओं की पूर्ति के प्रयास में गुजरता है वह भौतिक
- वस्तुओं को ही नही बल्कि स्नेह प्रेम, त्याग जैसे गुणों को भी इसलिए महत्व देता है क्योंकि वे उसकी ईच्छा पूर्ति में सहायक होते हैं

- स्वार्थी होना बुरा नहीं है यह मनुष्य की प्रवृत्ति है जिस तरह कोई पत्थर आकाश में फुट नहीं सकता वैसे ही कोई मनुष्य परोपकारी नहीं होसकता है।

अध्यात्मवाद (Asceticism):

- स्वार्थवाद का विलोम/यह ऐसा जीवन है जहाँ स्वार्थ का कोई स्थान नहीं होता और व्यक्ति आध्यात्मिक क्षेत्र में अपना उत्थान करता है।

परोपकारवाद (Alteruism):

- यहाँ व्यक्ति ऐसा कार्य करता है जो अधिकांश लोगों के लिए लाभकारी होता है भले ही खुद उसका नुकसान हो जाए। उदाहरण-दूसरों के लिए जीना।

परिणाम निरपेक्ष नीति के प्रकार

प्राकृतिक अधिकार का सिद्धांत

- हॉब्स एवं लॉक के द्वारा प्रतिपादित, मानव के पास पूर्ण एवं प्राकृतिक अधिकार है। उदाहरण-मानव ने जो अधिकार प्रकृति से प्राप्त किया, कालांतर में वही मानवाधिकार हो गया।

दैवीय आदेश का सिद्धांत

- वैसा कार्य जिसे दैवीय स्वीकृति प्राप्त है, केवल वही सही है।

उद्देश्यात्मक सिद्धांत

- नैतिक नियम बाध्यकारी है, इसका उल्लंघन नहीं किया जा सकता। सभी को उचित नैतिक मार्ग पर चलना चाहिए। व्यक्ति का उद्देश्य ही उसके कार्य को नैतिक या अनैतिक बनाता है। कार्य के परिणाम को नैतिकता भी उद्देश्य पर निर्भर करती है।

2. बहुलवादी परिणाम निरपेक्ष नीति

- W.D रॉस के द्वारा प्रतिपादित आधारभूत दायित्व निम्न हैं
- उपकार (Beneficences): दूसरों की मदद करना ताकि उसको लाभ हो।
- गैर हानिकारकता (Non-Maleicences): लोगों का नुकसान करने से परहेज करना चाहिए।
- न्याय (Justice): लोगों को अपनी योग्यता के अनुसार फल प्राप्त हो।
- क्षतिपूर्ति (Reparation): अगर आपने किसी का नुकसान किया है तो उसकी क्षतिपूर्ति करनी चाहिए

3. गुण-नैतिकता

- यहां सीधे-सीधे किसी नैतिक सिद्धांत का सहारा नहीं लिया जाता है। किसी भी नैतिक कार्य के लिए यहां चरित्र की भूमिका तय कर दी गई है। कालांतर में मानव चरित्र विभिन्न प्राकृतिक आधारों और विभिन्न कारकों यथा परिवार, संस्कृति, शिक्षा आदि द्वारा नियंत्रित होता है।
- परिणामस्वरूप कुछ लोग अन्य की तुलना में ज्यादा गुणवान होते हैं। वो लोग जो ज्यादा गुणवान होते है अपने गुणों का व्यवहार कर सुख उत्पन्न करते है और जीवन को अच्छा बनाते हैं। नैतिक कृत्यों को निम्न आधारों पर जांचा जा सकता है।
- कृत्य निश्चित रूप से अच्छाई का प्रोत्साहक हो। उदाहरण-अच्छा जीवन, व्यक्तिगत सुख सामुदायिक हित इत्यादि।

विवरणात्मक नीतिशास्त्र Descriptive ethics

- वह शाखा जो नैतिकता के सम्बन्ध में प्रचलित विश्वासों का अध्यन करती है।
- यह विभिन्न समुदाय में रहने वाले लोगों के जीवन का एक सामान्य प्रतिदर्श / प्रतिमान प्रस्तुत करता है।
- इसके अंतर्गत नीतिशास्त्र के उद्भव और विकास का अध्ययन किया जाता है जिसके फलस्वरूप हमें कुछ परम्पराओं, रूढ़ियो तथा निषेधो का विवरण प्राप्त होता है।
- जैसे - परिवार या विवाह जैसी संस्थाओं के उदभव और विकास की जानकारी वर्णनात्मक नीतिशास्त्र के अध्ययन से ही मिलती है।

- वर्णनात्मक नीतिशास्त्र नैतिक निर्णयों का विलय का विश्लेषण भी करता है।
- साथ ही इस बात की पुष्टि करता है कि विभिन्न मानव समूहों द्वारा तय किये गए नैतिक प्रतिमान कोन कोन से है। वस्तुत वर्णनात्मक नीतिशास्त्र नैतिक प्रतिमानों के अध्ययन का एक स्वतंत्र उपागम है।

व्यावहारिक/अनुप्रयोगात्मक नीतिशास्त्र

- सभी नैतिक सिद्धांतों का व्यावहारिक जीवन में अनुप्रयोग का अध्ययन ही व्यावहारिक नैतिकता है। उदाहरणः गर्भपात, पशुओं पर परीक्षण इत्यादि।
- इसके अंतर्गत कुछ विशिष्ट बिंदु , नैतिक रूप में विवादास्पद, मुद्दों जैसे गर्भपात, जानवरों के अधिकार था इच्छा मृत्यु, आदि का विश्लेषण किया जाता है।
- कोई प्रश्न व्यावहारिक नीतिशास्त्र की विषय वस्तु है अथवा नही , यह दो बातों पर निर्भर करता है।

(1) प्रश्न विवादास्पद, -हो, साथ ही इसके पक्ष और विपक्ष में तर्क देने वाले मानव समूहों की तादाद भी वही हो ।

(2) प्रश्न किसी सामाजिक विवाद का विषय न हो बल्कि नैतिक धन से भी विवादास्पद हो ।

अधि नीतिशास्त्र (Meta ethices)

- यह अपने आप में समसामयिक आधुनिक विचार धारकों का समूह है जिसमें किसी व्यक्ति फो कैसा नैतिक आचरण करना चाहिए के विश्लेषण करने की वजाय मोरालिटी अपने आप में क्या है।
- अधि नीतिशास्त्र इस बात को देखा जाता है कि नीतिशास्त्र से जुड़े परिभाषिक शब्दों एवं मान्यताओं के वास्तविक आभिप्राय क्या है, अर्थात ये “क्या इंगित करते है”।
- जहां आदर्शात्मक नीतिशास्त्र के अंतर्गत अचरण के आदर्श व नियम बताए जाते है, पही अधि नीतिशास्त्र के अंतर्गत इन आदर्शो व नियमो की वैधता सुनिश्चित की जाती है।
- इसके अलावा यह नैतिक विशेषताओं व मूल्यांकनों की प्रकृति एवं स्वरुप निर्धारित करने का भी प्रयास करता है।

वास्तव में यह अधिनीति शास्त्र निम्न तीन से संबंधित हैं

1. **शब्दार्थ (Semantics):** इसके अंतर्गत शब्द फ्रेज. चिन्ह इत्यादि का अध्ययन करते हैं।
2. **ज्ञान-मीमांसा** (Epistemology) इसके अंतर्गत हम लोग ज्ञान या वैसे विश्वास का अध्ययन करते हैं जिसे तर्क या ज्ञान की कसौटी पर कसा जाता है।
3. **सत्ता-मीमांसा** (Ontology): व्यक्ति के प्रकृति का अध्ययन

अधिनीतिशास्त्र को निम्न दो भागों में बांटते है- 1. नैतिक यथार्थवाद, 2 नैतिक निःयथार्थवाद

नैतिक यथार्थवाद)Moral Realism):

- इसे विकल्पवाद भी कहते है। यहां नैतिक मूल्यों के वैकल्पिक आधार का अध्ययन किया जाता है। यहां कथनों का
- मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकन का आधार तथ्यात्मक है। उदाहरण: सत्य एवं असत्य नामक शब्द हमारे विश्वास, भावना और अभिरूचि पर आधारित नहीं है। इन शब्दों का मूल्यांकन करना भी जरूरी है।**नैतिक यथार्थवाद के दो प्रकार हैं:**

नैतिक प्रकृतिवादः

- इसमें तथ्यात्मक नैतिक गुणों का अध्ययन किया जाता है। इसके अंतर्गत संज्ञान (Cognitive) को स्वीकार किया जाता है, जिसका अर्थ है कि नैतिक वाक्यों को नैतिक कथन के रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है। अतः नैतिक कथन भी सत्य अथवा असत्य हो सकता है। इन नैतिक वाक्यों के अर्थ की अभिव्यक्ति प्राकृतिक विशेषता के आधार पर की जा सकती है, जहां नैतिक प्रयोग की आवश्यकता नहीं होती है।

नैतिक अप्रकृतिवादः

- मूर के द्वारा प्रतिपादित। यहां नैतिक कथन ऐसे होते हैं जिसे किसी भी परिस्थिति में लघुकरण के द्वारा अनैतिक कथन में परिवर्तित नहीं किया जा सकता। उदाहरण-'अच्छाई इसे किसी भी दूसरे रूप से परिभाषित नहीं किया जा सकता है। **नैतिक निःयथार्थवाद रू यहां पर वस्तुनिष्ठ मूल्य की स्थिति नहीं रहती। इसे हम एक या अनेक रूपों में देख सकते हैं। जो निम्न है**

- **नैतिक सापेक्षतावाद** कोई वस्तुनिष्ठ नैतिक विशेषता नहीं। कथन की सत्यता या असत्यता निरीक्षक की अभिवृत्ति पर निर्भर करता है या नैतिक कथन केवल एक अभिवृत्ति, राय, व्यक्तिगत वरीयता या किसी की पसंद पर निर्भर करता है।
- **नैतिक असंज्ञानात्मवाद** :नैतिक कथन अवास्तविक है। अतः यह न तो सत्य है न ही असत्य। इससे स्पष्ट होता है कि नैतिक ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं। इसके विभिन्न प्रकार नीचे दिए जा रहे हैं
- **संवेगवाद**: नैतिक कथन केवल हमारी भावना को अभिव्यक्त करता है।
- **सार्वभौमिकवादः** नैतिक कथन सार्वभौम होते है। जैसे- 'हत्या गलत है मतलब हत्या मत करो।
- **नैतिक समय:** इसमें एक से ज्यादा नैतिक ज्ञान नहीं होता है।

अधि नीति शास्त्र और मानकीय नीति शास्त्र

- मानकीय नीतिशास्त्र हमें यह बताता है कि मनुष्य के लिए स्पत : साध्य शुभ क्या है ,उसके कौन कौन से कर्म उचित है और कौन से अनुचित है। अपने प्रति और दूसरों के प्रति उसका कर्तव्य क्या है, शुभ -अशुभ तथा उचित-अनुचित अथवा कर्तव्य का निर्धारण किन नैतिक सिद्धांतों के आधार पर किया जा सकता है, आदि

अंतर

- मानकीय नीतिशास्त्र हमें यह बताता है कि हमारे लिए शुभ क्या है और हमें क्या करना चाहिए, जबकि आधिनीतिशास्त्र अमुक वस्तु हमारे लिए शुभ है तथा अमुक कर्म करना हमारा कर्तव्य है। इन नैतिक निर्णयों के अर्थ व स्वरुप का स्पष्टीकरण तथा विश्लेषण करता है।
- मानकीय नीतिशास्त्र मनुष्य का मार्गदर्शन करने के लिए प्रतिपादित नैतिक सिद्धांतों के समर्थन में तर्क प्रस्तुत करता है, जबकि आधि-नीतिशास्त्र इन तर्कों के स्वरुप तथा इनकी विधियों पर विचार करता है और इन तर्कों की प्राथमिकता की निष्पक्ष रुप से परीक्षा फरता है|
- इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अधिनीतिशास्त्र वास्तव में मानवीय नीति-शास्त्र का पूरक है। अधि-नीतिशास्त्र उन नैतिक निर्णयों के अर्थ और स्वरुप का स्पष्टीकरण तथा विश्लेषण करता है जो हम मानकीय नीति शास्त्र के सिद्धांतो के अनुसार अपने व्यावहारिक जीवन में करते है।
- इसी प्रकार अधि-नीतिशास्त्र में उन तर्कों के स्वरूप को स्पष्ट करता है जो मानवीय नीतिशास्त्र अपने नैतिक सिधान्तो की पुष्टि के लिए प्रस्तुत करता है।
- मानकीय नीतिशास्त्र के निर्णयों तथा तर्कों के अर्थ और स्वरुप को समझने के लिए अधि नीतिशास्त्र का ज्ञान बहुत आवश्यक है। परन्तु केवल अधि-नीतिशास्त्र को ही सम्पूर्ण भौतिक दर्शन मान लेना अनुचित एवं एकांगी दृष्टिकोण है।

व्याख्यात्मक नीतिशास्त्र

- यहां नैतिकता का मूल्यांकन लोगों के व्यवहार, लोगों की नैतिकता और मूल्य के प्रति विश्वास के आधार पर किया जाता है। इसे तुलनात्मक नीतिशास्त्र भी कहा जाता है। उदाहरण-भूत और वर्तमान के नीतिशास्त्र की तुलना, एक और अन्य समाज के नीतिशास्त्र की तुलना।

पर्यावरणीय नीतिशास्त्र

- पर्यावरणीय नीतिशास्त्र की शुरूआत 1960 के दशक से हुई। 1990 के दशक में जलवायु परिवर्तन एवं वैश्विक तापन को एक नैतिक मुद्दे के रूप में देखा गया।
- मनुष्य की अपने प्रति एवं दूसरों के प्रति जो बाध्यताएं होती है, वे बाध्यताएं एक नैतिक स्थिति की तरफ संकेत करती है, जैसे- हम सभी की दूसरों कि प्रति एक बाध्यता यह भी है कि किसी भी अन्य व्यक्ति को नुकसान न पहुंचाया जाए। किन्तु जब कोई भी मनुष्य अपने कार्यों से ज्यादा से ज्यादा कार्बन उत्सर्जन करता है तो वह दूसरों को नुकसान न पहुंचाने की बाध्यता को नकार देता है।
- इतना ही नहीं वह जाने-अनजाने अनेक ऐसे काम करता है, जिन कामों से दूसरों को परोक्ष रूप से नुकसान पहुंचता है, जैसे- ईमारती लकड़ी के लिए जंगल के कुछ पशुओं को भगाने के लिए जंगल के कुछ हिस्सों में आग लगाना, संसाधनों के लिए पृथ्वी का अंधाधुंध दोहन।

- इन कार्यों से चूंकि अन्य को नुकसान पहुंचाने की बाध्यता का खण्डन होता है, इसलिए ये मुद्दे नैतिक परिधि में आते हैं।
- जलवायु परिवर्तन एवं वैश्विक तापन वैश्विक मुद्दे हैं। वैश्विक मुद्दों के समाधान के लिए राष्ट्रों और व्यक्तियों के वैश्विक उत्तरदायित्व की आवश्यकता होती है, इसलिए भी जलवायु परिवर्तन एवं वैश्विक तापन नैतिक मुद्दा है।